सर्व की शुभ भावना, बेहद की भावना ही किसी भी सेवा की सफलता का आधार है

आज बापदादा के पास अपने विशेष कार्य अर्थ जाना हुआ। बापदादा सामने खड़े हुए बहुत-बहुत स्नेह और शक्ति रूप से मिलन मना रहे थे। बस, वह मिलन तो हम जानें और बाप जानें। कुछ समय बाद बाबा बोले – आओ बच्ची, क्या सर्व के सहयोग से भविष्य राजधानी के सेवा की नींव डालने वाले बेहद के स्थान का समाचार लाई हो ? बापदादा देख रहे हैं कि सर्व बच्चों का अटेन्शन इस बेहद के स्थान पर है कि क्या हुआ, क्या हुआ ... क्योंकि सबकी देहली राजधानी है। अनेक बार राज्य किया है और करना है इसलिए हर एक को अपनी राजधानी से आन्तरिक प्यार है। बापदादा भी कहते हैं कि सर्व ब्राह्मणों को हर प्रकार से सहयोग का बीज तो अब संगम पर डालना है। सहयोग की फाउन्डेशन सेरीमनी अब मनानी है और राज्य की सेरीमनी भविष्य में मनानी है। इसलिए सब बच्चों की इस बेहद के स्थान की तरफ नज़र है। हर एक की शुभ भावना है। और सर्व की शुभ भावना, बेहद की भावना ही सफलता दिलाने वाली है। फिर बाबा ने समाचार पूछा कि अब क्या कर रहे हैं ? मैंने कहा – बाबा, आज प्लैन सारा पास किया है। बाबा बोले – सबने अच्छा उमंग-उत्साह से प्लैन बनाया है। अब जितना उमंग से प्लैन बनाया है उतना ही चारों ओर सेवा के सहयोग की, शुभ भावना भी बच्चों को फैलानी है। उसके निमित्त भी विशेष निमित्त बच्चों को ही बनना है। यह संकल्प की सेवा भी करनी है। बच्चे सब यज्ञ के राज़ों को जानने वाले हैं और आदि से अब तक की विधि को भी जानते हैं कि आते जाना, लगाते जाना, यही रीति ब्राह्मणों की है। ऐसे अब भी आता जाये, लगाते जाओ, ड्रामा में अब तक हर एक कार्य सहज सम्पन्न हुआ है, अब भी होना ही है लेकिन इस बेहद के स्थान की विशेषता बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि ''कम खर्चा बाला नशीन'' का एक्जैम्पुल बनाना है। जितना हो सके यह भी ध्यान रखना है कि भिन्न-भिन्न शहरों में कोई-कोई बच्चों के सम्पर्क वाले इन्डस्ट्रियल, बिजनेसमैन जो मैटेरियल देने में सहयोगी बन सकते हैं, उन लोगों को भी सहयोगी बना सकते हैं। उन्हों को भी चावल-चपटी के सहयोग से भविष्य अधिकारी बना सकते हैं। ऐसे बेहद

की सेवा में अपना सहयोग देने का चांस अच्छा है। सभी ब्राह्मणों को अपना कार्य समझ स्वयं को आफर कर आफरीन लेने का चांस है।

ऐसे उमंग-उत्साह हिम्मत दिलाते हुए बापदादा बहुत-बहुत मीठा मुस्कराते हुए हमें देख रहे थे। मैं भी बापदादा की बातों को सुन-सुन हर्षित हो रही थी।

बाद में बाबा बोले – और क्या समाचार लाई हो ? मैंने कहा बाबा अब राखी बंधन आना है। दादी जी ने कहा है बाबा को कहना कि बाबा की अब क्या प्रेरणा है ? तो बाबा बोले – बच्ची रक्षा बन्धन तो हर वर्ष मनाते ही हैं। सबको सन्देश देते हैं, वह तो करना ही है। लेकिन और पावरफुल वायब्रेशन से परिवर्तन कराने की शुभ भावना से करना है। साथ-साथ बापदादा अब यही चाहते हैं कि सर्व ब्राह्मण बच्चे अब फास्ट गति से सम्पन्न बनें। उसके लिए हर एक अपनी हिम्मत से चल ही रहे हैं लेकिन अब हर एक को यह जिम्मेवारी की राखी बांधनी है कि जो भी साथी साथ रहते हैं वा जिज्ञासु हैं, सम्पर्क वाले हैं उन्हों के संस्कारों में मन्सा-वाचा-कर्मणा में जो भी कमी कमजोरी है, मुझे अपनी हिम्मत और बाप की मदद से उसको सहयोग दे आगे बढ़ाना है, वायुमण्डल बनाना है। हर एक को समस्या समाधान स्वरूप बनना है। विघ्न-विनाशक स्वरूप बनना है, बनाना है। इसके लिए १- समाने की शक्ति २- सहन शक्ति और ३- समस्या का सामना करने की शक्ति, अब त्रिमूर्ति शक्तियों के लड़ियों की राखी मन में संकल्प में बाँधनी है क्योंकि अब समय, प्रकृति, आत्माओं की पुकार है कि आओ हमारे मालिक, परिवर्तक आओ, हमें अब शुद्ध स्वरूप में परिवर्तन करो। क्या यह पुकार बच्चों के कानों में नहीं गूँजती है ? तो अब बाबा तीव्र से तीव्रगति देखने चाहते हैं और यही शुभ आशा हर बच्चों में रखते हैं। फिर बापदादा ने सभी बच्चों को नाम सहित बहुत-बहुत मीठी दृष्टि देते यादप्यार दिया।